भगवान ने कहा, भगवान सदा साथ है

मुझे बचपन से ही भगवान से मिलने की चाह रही, साधु-संन्यासी जो भी मिलते, सबसे यही कहती, 'बाबा, मुझे भगवान से मिला दो, बाबा, मैं भगवान को देखना चाहती हूँ।' रामायण, गीता आदि ग्रन्थ कण्ठ कर लिए थे पर फिर भी मन में कई प्रश्न उठते थे। रामायण में आता है कि –

'वैर न कर काहू सन कोई,
राम प्रताप विषमता खोई।।'

इसे पढ़कर सोचती थी कि राम के नाम से तो वैर भाव खत्म होते हैं फिर राम और रावण का वैर क्यों दिखाते हैं? राम ने रावण के परिवार को खत्म किया तो क्या यह वैर नहीं है? अन्दर यही आभास होता था कि बात कुछ और ही है। सत्य कुछ और ही है और दिल में यही रहता था कि अगर कोई भी कहेगा कि 'भगवान आया है' तो उसी समय वहां चली जाऊँगी। फिर मैं भगवान के बारे में सोच-सोचकर बीमार रहने लगी। कोई कमी नहीं थी, फिर भी मैं सन्तुष्ट नहीं थी। दिल खोजती, तो उत्तर मिलता कि भगवान मिलेंगे तभी ठीक होऊँगी। ज़्यादा तबियत खराब होने की वजह से मुझे हॉस्पिटल में दाखिल करवा दिया गया। वहाँ मैं रोज़ सपने में मधुबन, मधुबन का भण्डारा, मधुबन का सब्ज़ी विभाग देखती, कभी ऊँ शान्ति भवन भी देखती। मेरे आसपास जो भी मरीज़ होते थे उनको मैं बताती थी कि आज मैंने सपने में यह-यह देखा। पन्द्रह दिन तक वहां रही, कुछ न कुछ अलौकिक दृश्य देखती ही रही। फिर मैं घर आ गई।

एक बार कार्यवश एक कार्यालय में जा रही थी, रास्ते में देखा कि दो लड़कियों को खूब अच्छे जेवर-कपड़े आदि पहनाकर, हाथी पर बैठाकर, उनकी सवारी निकाली जा रही है। मैंने पूछा तो लौकिक पति ने बताया कि ये कन्यायें अरजिका बनेंगी इसलिए इनकी सवारी निकाली जा रही है। मैं भी उनके जुलूस के पीछे-पीछे चल दी ताकि देखूँ कि कैसे बनती हैं अरजिका। अगर अरजिका बनने से भगवान मिल जायेंगे तो मैं भी अरजिका बन जाऊँगी। आगे एक जगह पण्डाल लगा हुआ था। तख्त पर सफेद चादर बिछी हुई थी, एक

बहन सफेद कपड़ों में वहाँ बैठी थी। मैं यह सब देख रही थी कि इतनी ही देर में वो दोनों कन्यायें, सब शृंगार उतार कर, सफेद वस्त्र पहनकर, हाथ में पड़छाल लेकर पण्डाल में आईं और बड़ी बहन के पास बैठ गईं। काफी लोगों की भीड़ थी। मैं भीड़ में जैसे-तैसे घुसकर उनके पास चली गई कि भगवान अब ज़रूर आयेंगे। थोड़ी देर में बड़ी बहन ने उन कन्याओं के बाल उखाड़ने शुरू कर दिये। अब तो मेरे धैर्य का बाँध टूट गया, मैंने रोना शुरू कर दिया और मन-ही-मन भगवान से कहने लगी, 'हे भगवान, अगर देहधारी बाप भी यहां होता तो कहता, बस, रहने दो, मेरे बच्चों के केश मत नोचो। तेरे लिए ये अपने केश नुचवा रहीं

हैं, फिर भी ना मालूम तू मिलेगा भी कि नहीं।' दिल में शंका होने लगी कि कोई भी आज तक बता नहीं पाया कि भगवान कहाँ है, कब मिलेगा, भगवान है भी कि नहीं। कहीं लोग ऐसे ही पागल तो नहीं हो रहे हैं भगवान के नाम पर। कल से ना ही मन्दिर जाऊँगी, ना ही गीता-पाठ करूँगी, ना रामायण पढ़ूँगी, ना भगवान को याद करूँगी। मन-ही-मन ये सब बातें करते हुए मैं घर आ गई।

एक दिन एक दूसरी बहन और मैं उन्हीं कन्याओं से मिलने चल पड़ी। कार्यक्रम तो पार्क में देखा था पर उनके सही स्थान का पता हमारे पास नहीं था। पार्क के पास ही एक दुकान पर एक बहन बैठी थी। हमने उससे पूछा कि जिन कन्याओं ने संन्यास लिया था वे कहाँ रहती हैं, तो उसने ब्रह्माकुमारी आश्रम का पता बता दिया। वहाँ भी दो बहनें मिलीं। ब्रह्माकुमारी आश्रम की बहनें भी सफेद कपड़े पहनती हैं। मैंने उनको ही जैन साध्वी समझ लिया और इसलिए मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब मैंने देखा कि तीन दिन पहले तो इनके केश उखाड़े गए थे, आज इतने लम्बे बाल आ भी गये? तभी दीदी ने कहा, 'आओ, अन्दर आकर के समझो।' मैं अन्दर गई, उन्होंने मुझे प्रदर्शनी समझाई। जैसे-जैसे वो चित्रों पर समझा रही थी, मैं मन-ही-मन सोचती जा रही थी कि यही बातें तो मैं सबसे पूछती थी, किसी ने भी आज तक नहीं बताईं, पर ये सब इनको कैसे पता चलीं? चित्र पर समझते-समझते जब ब्रह्मा बाबा का चित्र सामने आया तो बहन जी ने कहा कि इनके तन में भगवान आते हैं और यह ज्ञान भगवान ही देते हैं। मैंने पूछा, 'क्या आप भगवान से मिलीं हैं?' बहन जी ने कहा, 'कई बार।' मैंने कहा, 'क्या आप मुझे भगवान से मिला देंगी?' उन्होंने कहा, 'कुछ दिन तक यहाँ आना पड़ेगा।' मैंने कहा, 'ज़रूर आऊँगी।' मेरी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। हम 3 बजे आश्रम पहुँचे थे और 7 बजे, बड़ी मुश्किल से बहन जी ने हमें वहाँ से रवाना किया। लौटने के लिए दिल नहीं कर रहा था। मैं कहती रही, 'बहन जी, आप यह ज्ञान मुझे दिन-रात सुनाती रहो, मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।' बहन जी ने कहा, 'कल आठ बजे आना, हम आपको कोर्स करायेंगे।' मैंने रात बड़ी मुश्किल से निकाली। बाबा का कुर्ता अपनी साड़ी से सपने में बांधती रही कि कहीं भगवान मुझे छोड़कर चले ना जायें। पन्द्रह दिन तक ऐसे ही चलता रहा, रात-रात भर खुशी के मारे सोती नहीं थी। सपने में बाबा ही बाबा देखती रही। सबसे कहती रही, 'अरे, भगवान आ गया।' लौकिक पति समझने लगे कि यह पागल हो गई है। मैं उनसे कहती, 'मैं पागल नहीं, मैं ठीक हो गई हूँ। जो चाहती थी वो मुझे मिल गया है। मुझे अब और कुछ नहीं चाहिए। मेरी तबियत भी ठीक है, आप चिन्ता मत करो। मुझे कोई जादू नहीं लगा है।'

अब तड़फन यह थी कि एक महीना तो पूरा हो गया, बहन जी भगवान से कब मिलायेंगी। मैंने कहा, 'बहन जी, अब मुझे भगवान से मिलाओ।' उनकी मधुबन आने की टिकट पहले ही बुक हो चुकी थी। उन्होंने कहा, 'हम जा रहे हैं, आप तो केवल एक महीना ज्ञान में चली हो, आप तो नहीं जा सकोगी।' मुझे बहुत कष्ट हुआ। मैंने कहा, 'दीदी, भगवान से मिलने के लिए ऐसा क्यों कहती हो।' दीदी ने कहा, 'भगवान से मिलने के लिए कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है जैसे, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन, खान-पान की शुद्धि का पालन आदि।' खान-पान की शुद्धि तो हमारी पहले से ही थी। मैंने कहा, 'दीदी, आप

एक जन्म की बात कहती हो, मैं सात जन्म के लिए ब्रह्मचर्य व्रत लेती हूँ, आप मुझे बस भगवान से मिला दो।' बहन जी ने कहा, 'ठीक है, हम अपनी बड़ी दादी से पूछेंगे।' मैं रात भर सोई नहीं,बाबा से कहती रही, 'बाबा मुझे ज़रूर बुला लेना।' जैसे ही मुझे नींद आई, एक मीठी आवाज़ सुनाई दी, 'बच्ची, चलो उठो, घर चलो।' मैं सुबह जल्दी ही आश्रम पहुंच गई और मैंने कहा, 'दीदी, मुझे ज़रूर आपके साथ चलना है, बाबा ने मुझे बुलाया है, मुझे बाबा की आवाज़ आई है।' बहन जी मेरा आग्रह मान गई। कहने लगी, 'अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना।' मैंने कहा, 'मर जाऊँगी, प्रतिज्ञा नहीं तोडूँगी।' हम माउण्ट आबू पहुँच गये। एक दिन बहन जी ने बताया कि आज रात को बाबा आयेंगे। बड़ी खुशी हुई। जिन्दगी का पहला सुनहरा दिन, जो भगवान मिलेंगे। रात को बाबा आये, मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

यह सन् 1984 की बात है। उन दिनों बाबा एक-एक से मिलते थे। बाबा के हाथ में मेरा हाथ था, नैन मुलाकात हो रही थी। बाबा ने मुझे कहा, 'शिव-शक्ति हो।' मैं कुछ नहीं समझी। ज्ञान पूरा नहीं था। मैं प्रेम दीवानी ज्ञान की भाषा क्या समझूँ? मैं बाबा को देखती रही। मैं असीम प्यार की अनुभूति में डूबती जा रही थी कि आज इन आँखों से भगवान को देख रही हूँ। बाबा ने कहा, 'शिव शक्ति हो?' मैंने फिर कुछ नहीं समझा। तीसरी बार बाबा ने फिर कहा, 'शिव शक्ति हो, अकेली नहीं हो भगवान साथ है, घर बैठे भगवान मिला है।' बाबा मुस्कराये। यह दृश्य मैं कभी भूल नहीं सकती। उसी समय मेरे अन्दर इतनी शक्ति आ गई और मैंने दिल में ठान लिया कि भगवान का हर बोल सत्य है। **जब भगवान खुद कहता है कि 'मैं तेरे साथ हूँ', तो मित्र-सम्बन्धी तो क्या चाहे सारी दुनिया मुझे कुछ भी कहे, मैं भगवान को नहीं छोडूँगी। वही हुआ, बहुत समस्यायें आईं लेकिन अन्दर में यह पक्का निश्चय था कि मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता क्योंकि भगवान ने खुद कहा है, 'मैं तेरे साथ हूँ', मैंने थोड़े ही कहा है कि 'भगवान तुम मेरा साथ दो।' इस प्रकार मैं निडर होती गई, मैं कुछ गलत तो कर नहीं रही थी, अच्छे रास्ते पर ही चल रही थी। मैं अकेले पूरे समाज का सामना करती रही। मैं अकेली नहीं थी, बाबा मेरे साथ था और है।** फिर रिश्तेदार और घर के लोग यह देखने के लिए कि वहाँ आश्रम पर होता क्या है, मेरे साथ मेरी कन्याओं को भी भेजने लगे। जिस भी कन्या को वे मेरे साथ भेजते, उसी को वहाँ का वातावरण और ज्ञान अच्छा लगने लगता और वो मेरी सहयोगी बन जाती। एक साल के पश्चात् लौकिक पति भी ज्ञान में आ गये। जब मैं और मेरे युगल इकट्ठे बापदादा से मिल रहे थे तो बाबा ने पर्सनल वरदान भी दिया कि लक्की परिवार है, सौभाग्यशाली परिवार है। लौकिक में मेरी चार पुत्रियां और दो पुत्र हैं। सारे बच्चे कुमार और कुमारी जीवन बिता रहे हैं। दो बड़ी पुत्रियां पिछले पन्द्रह वर्षों से ईश्वरीय सेवा में समर्पित हैं और अलग-अलग सेवाकेन्द्र सम्भाल रहीं हैं। बाकी दोनों पुत्रियां भी अलौकिक सेवायें करती हैं। दोनों बेटे भी सहयोगी हैं। दोनों बापदादा से भी मिले हैं। बाबा के वरदान और दुआओं से सब ईश्वरीय सेवा में सहयोगी हैं। ❑

ज्ञानामृत कार्यालय में, रूहानी स्नेह और पवित्रता की प्रतीक राखियाँ भेजने वाली स्नेही दैवी बहनों को बहुत-बहुत आभार!

– सम्पादक